तन को देता शक्ति, मन में भरे उल्लास ।
शरीर संतुलित रखे, नृत्य का अभ्यास ।

दूसरी इकाई

❑ चित्र में आए सुविचार/सुवचनों का वाचन कराके उनपर चर्चा कराएँ । नृत्य से क्या-क्या लाभ होते हैं, पूछें । भारतीय विरासत में लोकनृत्य का महत्त्व बताएँ । विद्‌यार्थियों से नृत्य करने वाले कलाकारों के नामों की सूची बनवाएँ ।

● वाचन – पढ़ो और अभिनय के साथ गाओ :

२. सीख

सीखो फूलों से तुम बच्चो !
काँटों में भी मुसकाना ।
सीखो कोयल से जाकर यह,
मधुर गान निसदिन गाना ।।

सीखो नदियों औ झरनों-से,
तुम आगे बढ़ते जाना ।
ऊपर आफत आने पर भी,
कभी न मन में घबराना ।।

सीखो पय-पानी से जाकर,
कैसे मित्रों को पाना ।
औ कैसे उनकी रक्षा में,
स्वयं जूझना मर जाना ।।

सीखो धरती से तुम जाकर,
कष्टों को जग के सहना ।
सीखो वृक्षों से भी जा यह,
दुख सारे चुप ही सहना ।।

– डॉ. वेदप्रकाश शास्त्री

❑ उचित हाव-भाव, लय-ताल के साथ कविता का पाठ करें । विद्यार्थियों से साभिनय गवाएँ । कविता में आई सीखों पर चर्चा कराएँ । प्रकृति में और किनसे सीख मिलती है, पूछें और मार्गदर्शन करें । कविता में आए तुकांत शब्दों को लिखवाएँ ।

स्वाध्याय हेतु अध्यापन संकेत – स्वाध्याय में दिए गए 'सुनो', 'पढ़ो' के प्रश्नों के लिए सामग्री उपलब्ध कराएँ । यह सुनिश्चित करें कि सभी विद्यार्थी नियमित रूप से स्वाध्याय कर रहे हैं । विद्यार्थियों के स्वाध्याय का 'सतत सर्वंकष मूल्यमापन' भी करते रहें ।

स्वाध्याय

१. **सुना हुआ कोई संस्कारगीत सुनाओ ।**

२. **दिए हुए शब्दों को वर्णमाला के क्रम में लगाओ :**

गिरि, खड़िया, चावल, छत्र, घटाव, झपकना, ठोकर, ढाका, टट्टू, जग, कढ़ाई, डलिया ।

३. **किसी समाजसेवी के बारे में पढ़ो ।**

४. **एक वाक्य में उत्तर लिखो :**

(क) कोयल से क्या सीखना है ?

(ख) मित्रों को पाना किससे सीखना है ?

(ग) मित्रों के लिए कवि क्या करने के लिए कहता है ?

(घ) धरती से हमें कौन-सी सीख मिलती है ?

(ङ) कवि हमें किनसे सीखने के लिए कह रहा है ?

५. **चित्र देखकर साधनों के नाम और कार्य बताओ :**

६. **किसी अतिथि के घर आने पर तुम क्या करते हो, क्रमशः बताओ :**

(च) नाश्ता कराते हो ।

(छ) पानी देते हो ।

(ज) चाय पूछते हो ।

(झ) स्वागत करते हो ।

(ञ) नमस्ते कहते हो ।

43EGFN

● **भाषण – संभाषण – सुनो और दोहराओ :**

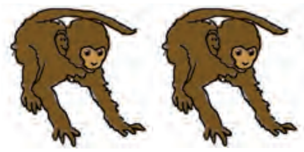

३. घंटाकरण

नगर में यह अफवाह फैल गई कि जंगल में भूत रहता है । उसका नाम घंटाकरण है; वह घंटा बजाता है । अफवाह से लोग बहुत भयभीत हुए । जंगल की ओर भूलकर भी कोई न जाता था । जंगल से लकड़हारे लकड़ियाँ न बीनते, घसियारे घास न काटते, चरवाहे जंगल में पशुओं को न ले जाते थे ।

सारा का सारा जंगल घंटाकरण भूत की राजधानी बन गया । अब तो उस नगर के राजा को भी बड़ी चिंता हुई । उसने सयानों और जादूगरों को इकट्ठा कर कहा, "भाई, इस भूत को इस जंगल से निकालो वरना सारा जंगल वीरान हो जाएगा और जंगल से मंगल गायब हो जाएगा ।"

लोगों ने अपने-अपने तरीके आरंभ किए परंतु घंटाकरण किसी के काबू में न आया । तभी एक बुद्धिमान मनुष्य उधर कहीं से आ निकला । वह भूतों में विश्वास नहीं करता था । वह अनुमान लगाने लगा कि सच्चाई क्या हो सकती है । वह साधु का वेश बनाकर जंगल में घुसा । वहाँ जाकर जो देखा तो सारा सच उसकी समझ में आ गया । लौटकर उसने राजा और नगरवासियों से कहा, "आप मुझे एक बोरा भुने हुए चने दें तो मैं कल ही भूत को पकड़ लाता हूँ ।"

लोगों ने उसका कहा माना । बुद्धिमान मनुष्य चने लेकर जंगल में पहुँचा । उसने वह चने एक पेड़ के नीचे डाल दिए । उसने देखा कि पेड़ से कई बंदर नीचे उतरे और चने खाने लगे । उनमें से एक बंदर के हाथ में घंटा था । उस बंदर ने घंटा फेंक दिया और चने खाने लगा । बुद्धिमान आदमी ने घंटा उठाकर नगर की राह ली ।

दरबार में पहुँचने पर बुद्धिमान मनुष्य ने राजा से कहा, "महाराज यह घंटा बंदरों के हाथ पड़ गया था । जब उनकी मौज होती; वे घंटा बजाते । इस तरह जंगल में भूत होने की अफवाह फैल गई थी ।" सारे नगर और राजसभा में उस विद्वान को बड़ा आदर मिला । उस बुद्धिमान ने लोगों को सच्चाई परखे बिना किसी भी बात पर विश्वास न करने की अमूल्य सलाह दी । – ***जगतराम आर्य***

❑ उचित आरोह– अवरोह के साथ कहानी सुनाएँ । विद्यार्थियों से सामूहिक, मुखर वाचन कराएँ । उन्हें उनके शब्दों में कहानी कहने के लिए प्रेरित करें । पढ़ी हुई कहानियों के नाम बताने के लिए कहें । अंधविश्वास दूरकर वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर चर्चा करें ।

२६ CMYK

स्वाध्याय

१. **कोई एक साहस कथा सुनाओ ।**

२. **उत्तर दो :**

(क) अफवाह का क्या परिणाम हुआ ?

(ख) बुद्‌धिमान मनुष्य किसमें विश्वास नहीं करता था ?

(ग) साधु का वेश बनाकर जंगल में कौन घुसा ?

(घ) बंदर घंटा कब बजाते थे ?

(ङ) बुद्‌धिमान मनुष्य ने लोगों को कौन-सी सलाह दी ?

३. **'समय का महत्त्व' पर निबंध पढ़ो ।**

४. **जोड़ी मिलाकर पूरा वाक्य लिखो :**

(च) उस नगर के राजा को	उधर कहीं से आ निकला ।
(छ) जब उनकी मौज होती	बड़ा आदर मिला ।
(ज) तभी एक बुद्‌धिमान मनुष्य	वे घंटा बजाते ।
(झ) उस विद्‌वान को	मंगल गायब हो जाएगा ।
(ञ) जंगल से	बड़ी चिंता हुई ।

५. **चित्र देखकर अंधविश्वासों को पहचानो और इनपर कभी विश्वास मत करो :**

६. **छोटे से बड़े आकार के आधार पर इनका क्रम बताओ :**

विश्‍व, गाँव, राज्य, तहसील, देश, जिला ।

● **वाचन – अनुवाचन करो :**
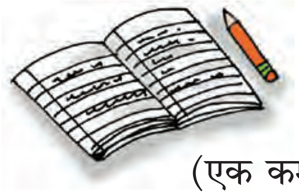
४. ऐसे–ऐसे

(एक कमरे का दृश्य, चादर ओढ़े अरुण सोया है ।)

माता जी – (पुचकारकर) न–न, ऐसे मत कर ! इसने कहीं कुछ उल्टा–सीधा तो नहीं खा लिया ?

पिता जी – अरे, यह तो अभी तक खेलता–कूदता फिर रहा था ।

अरुण – (जोर से कराहकर) माँ ! ओ माँ ! उफ......... उफ......... !

माता जी – न–न मेरे लाल ! ज्यादा ही तकलीफ जान पड़ती है । वैद्‌य जी को बुलाया है ।

अरुण – (रुआँसा–सा) बड़े जोर से 'ऐसे–ऐसे' होता है ।'ऐसे–ऐसे' !

(वैद्‌य जी का प्रवेश)

वैद्‌य जी – कैसे हो अरुण ? बेटा, खेलने से जी भर गया क्या ?

पिता जी – अभी तक तो ठीक था । एकदम बोला – मेरे पेट में 'ऐसे–ऐसे' होता है ।

वैद्‌य जी – पेट दर्द के लक्षण तो नहीं दिखते । शायद कुछ गलत खा लिया हो । मैं पेट साफ करने की दवा दे देता हूँ ।

(वैद्‌य जी जाते हैं । मास्टर जी घर आते हैं ।)

मास्टर जी – बहन जी, अरुण जैसे लड़कों को अक्सर यह बीमारी हो जाती है ।

माता जी – सच !..... क्या बीमारी है यह ?

मास्टर जी – अरुण ! पाठशाला का गृहकार्य पूरा कर लिया है ? डरो मत, सच बताओ ।

अरुण – जी... जी पूरा नहीं हुआ है । (अरुण मुँह छिपा लेता है ।)

मास्टर जी – (हँसकर) अरुण का पाठशाला का काम अधूरा रह गया । बस ! डर के मारे पेट में 'ऐसे–ऐसे' होने लगा – 'ऐसे–ऐसे' !

(सभी हँसने लगते हैं ।)

– विष्णु प्रभाकर

❑ उचित उच्चारण, आरोह–अवरोह के साथ संवाद का वाचन करें । विद्‌यार्थियों से अनुवाचन एवं मुखर वाचन करवाएँ । जीवन में जल के महत्व पर चर्चा कराएँ । पानी किन स्रोतों से मिलता है, पूछें । इन स्रोतों में पानी कहाँ से आता होगा, यह बताने के लिए कहें ।

स्वाध्याय

१. **मौसम संबंधी सुना हुआ समाचार सुनाओ ।**

२. **पाठशाला में कौन-कौन-से उपक्रम होते हैं, बताओ ।**

३. **अपने प्रिय कवि/ लेखक की जानकारी पढ़ो ।**

४. **उत्तर लिखो :**

(क) अरुण कहाँ सोया हुआ था ?

(ख) वैद्‌य जी ने कौन-सी दवा दी ?

(ग) 'ऐसे-ऐसे' बीमारी किन्हें होती है ?

(घ) मास्टर जी ने अरुण से क्या पूछा ?

(ङ) अरुण के पेट में 'ऐसे-ऐसे' क्यों होने लगा ?

५. **चित्र देखकर जल शुद्‌धीकरण प्रक्रिया को समझो और नाम बताओ :**

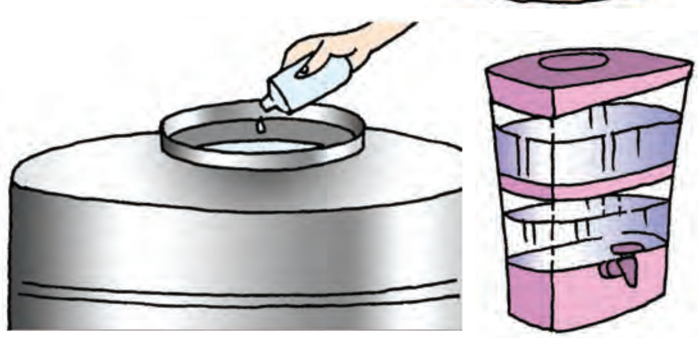

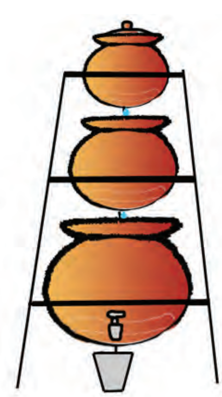

६. **जल प्रदूषण न हो इसलिए तुम क्या करोगे, क्या नहीं करोगे बताओ :**

(च) नल के आस-पास कचरा नहीं फेंकोगे ।

(छ) नदी में साइकिल, स्कूटर धोओगे ।

(ज) पीने के पानी में हाथ नहीं डुबाओगे ।

(झ) तालाब में कपड़े धोओगे ।

(ञ) तालाब में प्लास्टिक की थैली, बोतल नहीं डालोगे ।

43XBIY

● **हास्य – सुनो और दोहराओ :**

५. पेटूराम

पेटूराम पौटनपुर के रहने वाले थे । वे बहुत ही सीधे-सादे, भोले-भाले थे । वे कभी किसी से लड़ते-झगड़ते नहीं थे । पेटूराम तन से थोड़े मोटे थे । होते क्यों न ? खाते-पीते घर के जो थे । उन्हें पॉपकार्न, वेफर्स बहुत पसंद थे । तेलवाले पदार्थ खाने के कारण उनका शरीर थुलथुल हो गया था । वे छोटे-मोटे कुरते में समाते भी नहीं थे । गाँव के लोग सज्जन थे । इसलिए कोई उन पर हँसता नहीं था । एक बार पौटनपुर में विवाह समारोह था । पेटूराम जी को निमंत्रणपत्र मिला । ऑटोरिक्शा में किसी तरह घुसकर वे समारोह में पहुँच गए । तरह-तरह के पकवान बने थे । पेटूराम जी भोजन की तरफ लपके ही थे कि उन्हें एकाएक याद आया कि आज तो उनका उपवास है । वे मन मसोसकर लौट पड़े । उन्हें लौटते देखकर मेजबान लल्लूलाल पास आकर बोले –

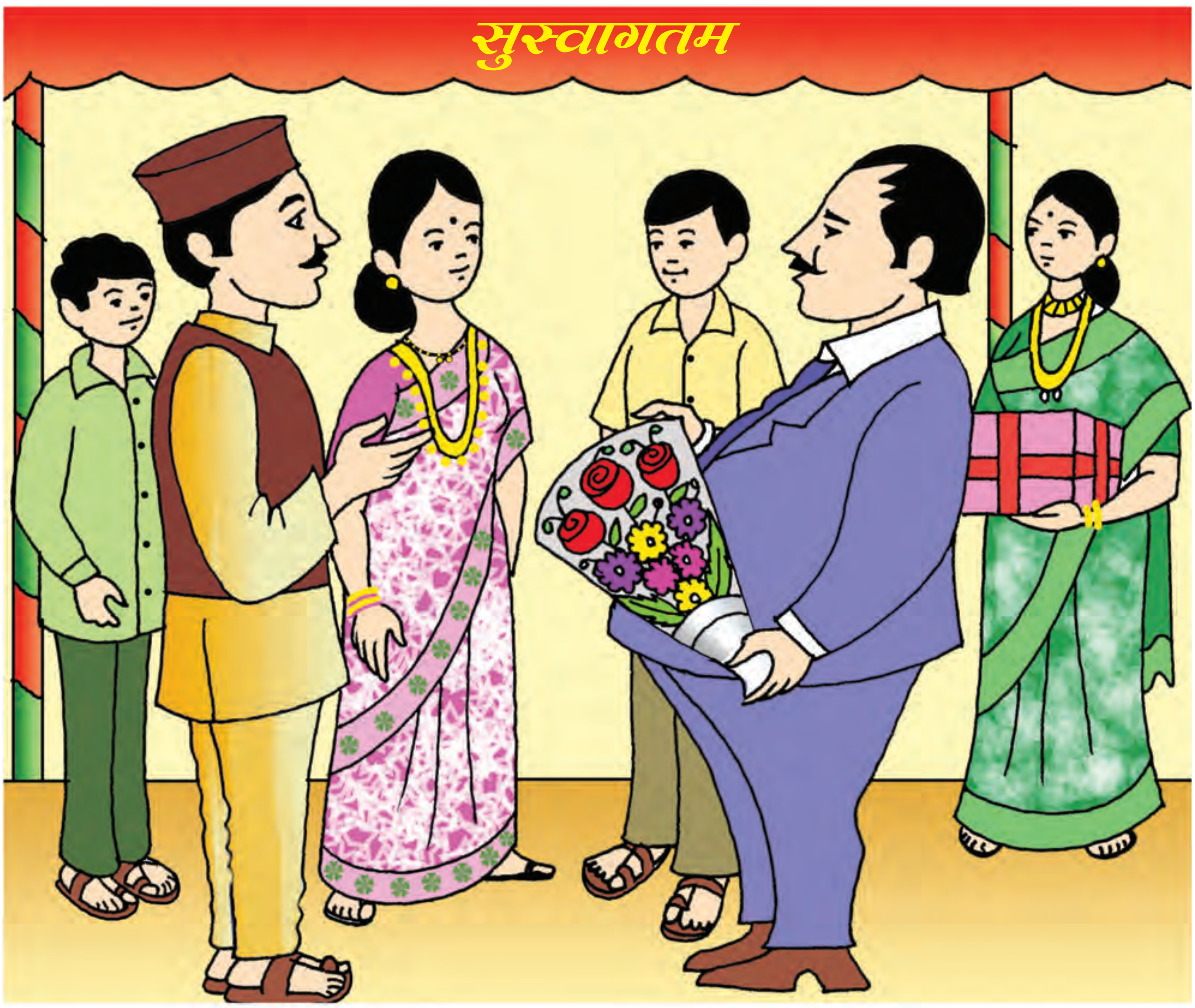

❑ उचित आरोह-अवरोह के साथ पाठ का मुखर वाचन कराएँ । मात्रायुक्त शब्दों का सुलेखन, श्रुतलेखन कराएँ । पाठ में आए शब्दयुग्मों का लेखन करवाएँ । इसी तरह के अन्य शब्दयुग्म बताने के लिए कहें । विद्यार्थियों से किसी विवाह समारोह का अनुभव पूछें ।

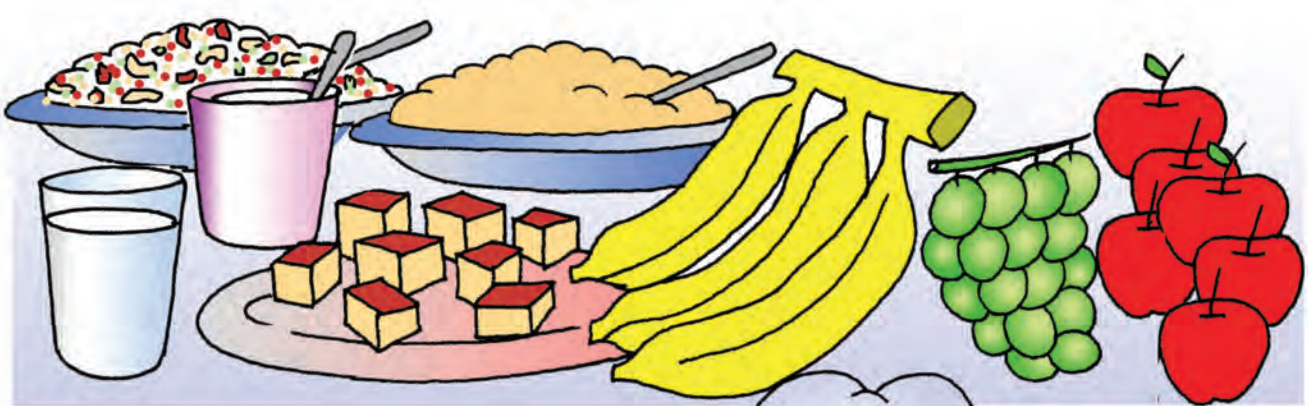

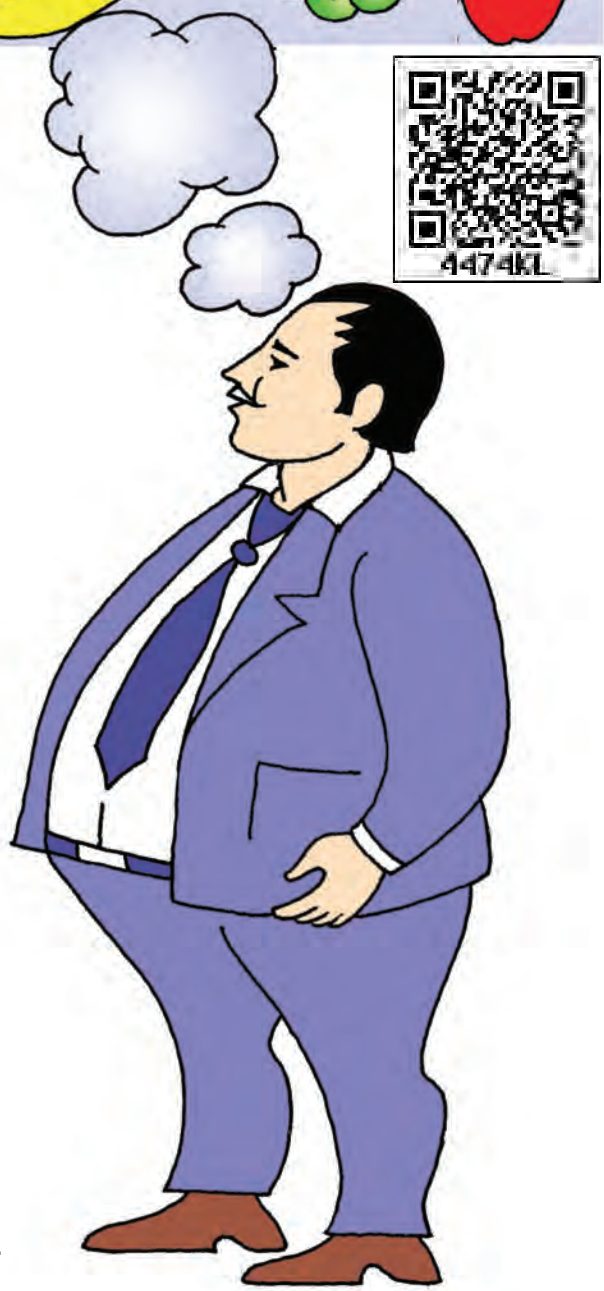

"चलिए, भोजन तैयार है ।"
"मैं............!"
"क्या आप भोजन नहीं करेंगे ?"
"आज मेरा उपवास है ।"
"उपवास में कुछ तो लेते होंगे ?"
"हाँ, थोड़ा बहुत खा लेता हूँ ।"
"फिर संकोच कैसा ? कृपया बताइए ।"
"अंगूर मिलते हैं ?"
"हाँ, बहुत मिलते हैं ।"
"केवल आधा किलो मँगवा लें ।"
"और ?"
"आधा दर्जन केले, एक किलो सेब ।"
"और ?"
"एक पाव मेवा, सवा पाव मिठाई ।"
"बस या कुछ और ?"
"आधा लीटर दूध और रबड़ी, बस ।"
"ठीक और कोई आज्ञा ?"
"नहीं – नहीं, आज मेरा उपवास है ।
मैं अधिक नहीं खाता ।"

– डॉ. त्रिलोकीनाथ ब्रजवाल

❑ पाठ में आए 'आ' से लेकर 'ऑ' तक के मात्रा चिह्नों के शब्द ढूँढ़कर लिखवाएँ । विद्‍यार्थियों से उनकी पसंद के एक ही वर्ण के बारहखड़ीवाले शब्द (कमल, कागज......) बनाकर लिखने के लिए कहें और इन्हीं शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करवाएँ ।

● भाषा–प्रयोग – पढ़ो, समझो और लिखो :

६. मिठाइयों का सम्मेलन

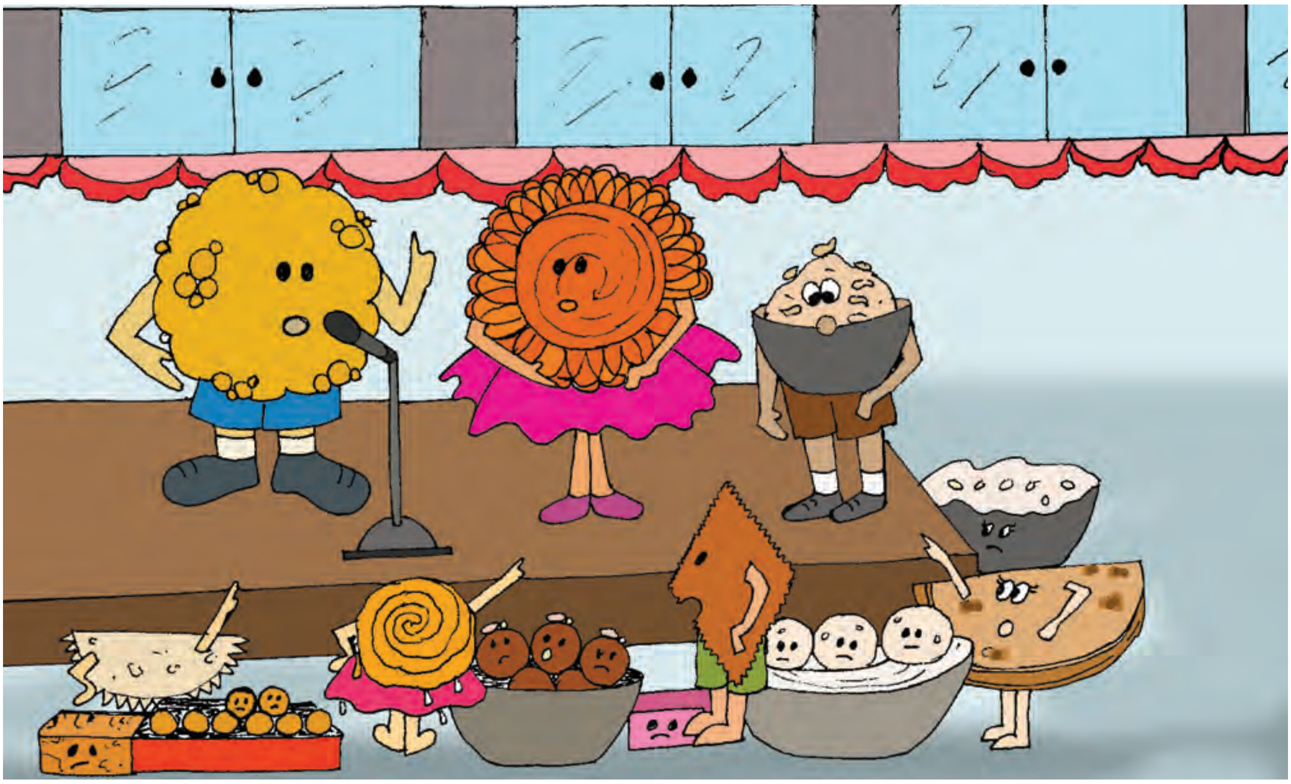

छगनलाल हलवाई दुकान बंद करके अपने घर चले गए । मौका मिलते ही बंद दुकान के भीतर मिठाइयों ने एक सम्मेलन का आयोजन किया । अध्यक्ष लड्डू दादा के साथ इमरती देवी और हलवाराम को बिठाया गया । श्रोताओं में पेड़ा, बरफी बहन, रसगुल्ला, जलेबी देवी, रबड़ी रानी, गुलाबजामुन, मैसूरपाक, रसमलाई, सोनपापड़ी, बालूशाही, कलाकंद भाई, गुझिया, काजूकतली और शक्करपारा आदि बैठे ।

कलाकंद भाई – आजकल डॉक्टरों द्‌वारा कुछ लोगों को हमारा सेवन करने से रोका जा रहा है ।

सोनपापड़ी – क्या आप जानते हैं कि डॉक्टर लोग ऐसा क्यों कर रहे हैं ?

बरफी बहन – कलाकंद भाई क्या बताएँगे ?

जलेबी देवी – बरफी बहन तुम ही बता दो न !

बरफी बहन – आप इस तरह मेरा मजाक मत उड़ाइए ।

मैसूर पाक – बरफी बहन और जलेबी देवी आप दोनों यह न भूलें –

❑ विद्‌यार्थियों से एकांकी का वाचन कराएँ । पाठ में आए स्त्री–पुरुष और एक–अनेक बोध कराने वाले शब्दों की सूची बनवाएँ । मिठाइयों के मानवीकरण को समझाएँ । पसंदीदा मिठाइयों के नाम पूछें । मिठाई के अतिसेवन से होने वाली हानियों पर चर्चा करें ।

मीठा अपना स्वाद है, मीठे-मीठे बोल ।
बस मिठास फैलाइए, मन दरवाजे खोल ।।

रसगुल्ला – आप यह नहीं जानते कि हमारी अति मिठास ही हमारी उपेक्षा का कारण है ।

गुलाबजामुन – रसगुल्ला भाई बिलकुल सही कह रहे हैं पर-

जीभ चटोरी ना सुने, माँगे मीठा मोर ।
मीठा-मीठा खाय के, लोग न होवें बोर ।।

गुझिया – कुछ लोगों के शरीर में शक्कर का अनुपात बढ़ रहा है ।

रबड़ी रानी – आप सभी ने सुना होगा कि जहाँ अति होती है, वहाँ क्षति होती है । हमारा सेवन करते समय लोग अति कर देते हैं, बाद में भुगतते हैं ।

लड्डू दादा – इसके लिए हमें अपने में शक्कर की मात्रा कम करनी चाहिए ।

गुलाबजामुन – फिर हमें मिठाई कौन कहेगा ?

लड्डू दादा – ध्यान रखो, शक्कर कम होने से ही हम लोगों के मन में मिठास बढ़ा सकते हैं ।

हलवाराम – हमारी उपयोगिता पर हमें चिंतित होने की आवश्यकता नहीं !

पेड़ा – शुभ कार्यों में मिठाई बाँटने की प्रथा को कौन बंद कर सकता है ?

लड्डू दादा – लोगों को भी चाहिए कि वे अपनी जीभ पर थोड़ा काबू रखें । हमारा सेवन करें पर अति न करें । शारीरिक श्रम करते रहें ।

44F2H9

इस निर्णय के साथ सभी को धन्यवाद देते हुए अध्यक्ष लड्डू दादा ने सम्मेलन समाप्ति की घोषणा की ।

– प्रा. मनीष बाजपेयी

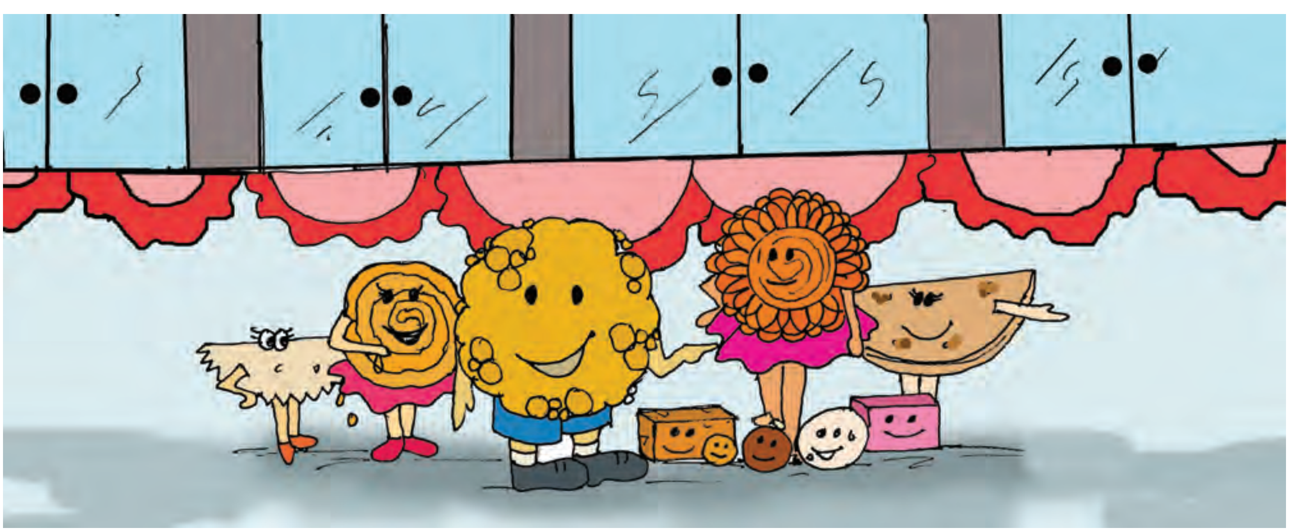

❑ एक-अनेक और स्त्री-पुरुष बोध कराने वाले शब्दों के अन्य उदाहरण देकर वचन/लिंग का दृढ़ीकरण करवाएँ । विद्‌यार्थियों से पाठ्‌यपुस्तक में आए इसी प्रकार के शब्दों को ढूँढ़ने और लिखने के लिए कहें । इन शब्दों के प्रयोग पर ध्यान आकर्षित करें ।

● **आकलन– बताओ और लिखो :**

७. मेरे अपने

चाचा जी चाची जी दादी जी दादा जी नानी जी नाना जी मौसा जी मौसी जी

फूफा जी बुआ जी पिता जी स्वयं माता जी मामा जी मामी जी

मेरा नाम .... है । मैं अपने और का/की.............

हूँ । (**पुत्र/पुत्री**) मैं अपने और का/की

44PVNH

.... हूँ । (**पोती/पोता**) मैं अपने और का/की ....

.............हूँ । (**नातिन/नाती**) मैं अपने और

का/की .... हूँ । (**भतीजा/भतीजी**) मैं अपने

और का/की .... हूँ । (**भांजी/भांजा**)

❑ छात्रों से अपना फोटो चिपकाने और चित्र देखकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करने के लिए कहें । दर्शाए गए रिश्तों को समझाकर विद्‌यार्थियों से पाठ्यांश का वाचन एवं चर्चा कराएँ । उन्हें अन्य रिश्ते लिखने और अपना पारिवारिक 'अलबम' बनाने के लिए कहें ।

● कार्यानुभव – पढ़ो और बताओ :

८. पतंग

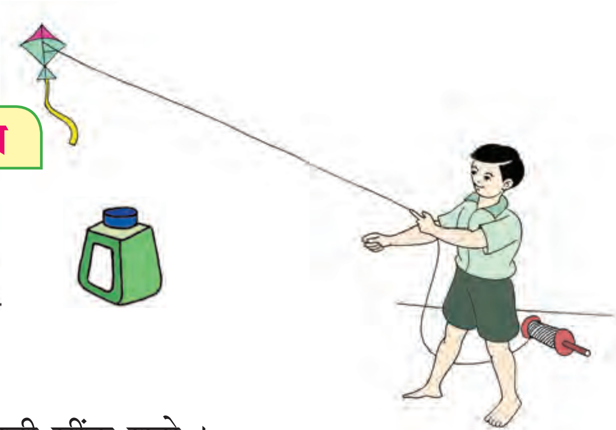

१. पतंग बनाने के लिए चौकोर कागज लो ।
२. उस कागज के ऊपर-नीचे की कोरों पर बड़ी सींक रखो ।
३. कागज के दोनों कोरों पर सींक को गोंद और कागज से चिपकाओ।
४. अब छोटी सींक की कमान बनाते हुए बाईं-दाईं कोर पर रखो ।
५. अंत में तिकोना कागज नीचे बंधी हुई सींक पर चिपकाओ ।
६. लो, हो गई तैयार तुम्हारी पतंग ।

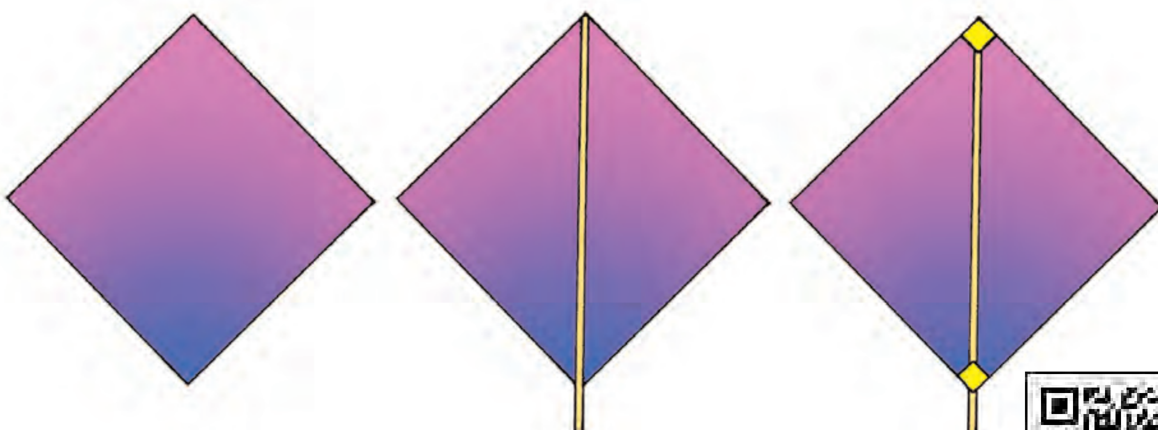

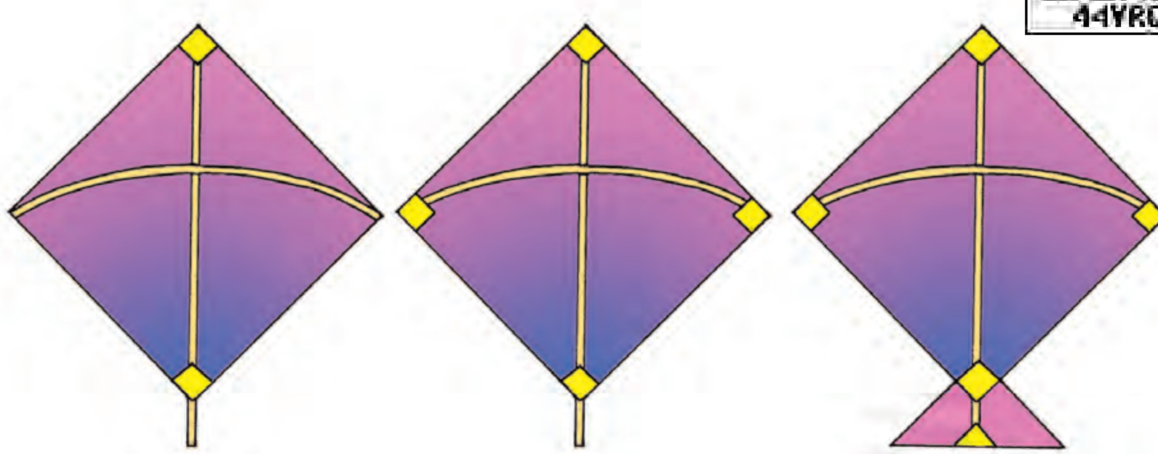

❑ विद्यार्थियों से ऊपर दिए गए चित्रों का निरीक्षण कराएँ । प्रत्येक चित्र के नीचे दिए गए वाक्यों को ध्यानपूर्वक पढ़ने के लिए कहें । उपरोक्त सभी कृतियाँ विद्यार्थियों से समूह, गुट एवं एकल रूप में करवाएँ । इस प्रकार उन्हें अन्य वस्तुएँ बनाने के लिए प्रेरित करें ।

- **आत्मकथा – सुनो, पढ़ो और लिखो :**

९. मैं दीपक हूँ

मैं दीपक हूँ ।

सर्वप्रथम आदिमानव ने पत्थर पर पत्थर पटककर, रगड़कर अथवा घिसकर आग पैदा की । धीरे-धीरे मानव का विकास होता गया और साथ में मेरा भी जन्म हुआ । जब से मानव मिट्टी के बरतन बनाने लगा तब से उसने मिट्टी से मुझे विभिन्न आकारों में बनाकर, नक्काशी करके, मेरा सौंदर्य और भी बढ़ाया । अब मेरे दो साथी, तेल और बाती मेरे साथ थे । मैं झोंपड़ी और घर को प्रकाशित करने लगा । बाद में उसने मुझे धातु से भी बनाना शुरू किया । मुझे अलग-अलग सुंदर आकार और नाम मिलते गए, जैसे ढिबरी, दीपक, चिराग, दीया, लालटेन आदि ।

मेरे टिमटिमाते प्रकाश में कितने ही महापुरुषों ने अध्ययन किया और ज्ञान से इस संसार को आलोकित किया । मुझपर गीत लिखे गए । कहा जाता है कि संगीतकारों ने मेरे लिए दीपक राग भी रचा, जिसे सुनकर मैं अपने-आप जल उठता था ।

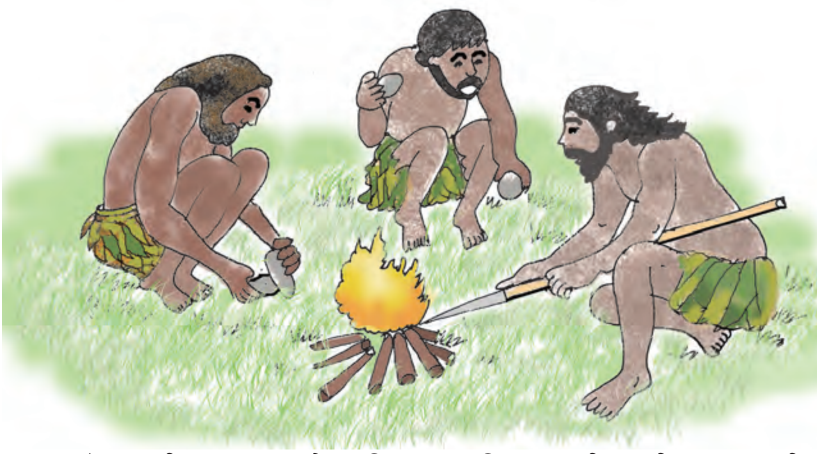

संसार के महान वैज्ञानिक 'एडिसन' ने मुझे एक नये रूप में विकसित किया । उन्होंने बिजली से जलने वाले विद्‌युतदीप का आविष्कार किया । आजकल तो मैं सौर ऊर्जा से भी जगमगाता हूँ । मनुष्य ने अपनी संस्कृति और रीति-रिवाजों के साथ मुझे हमेशा जोड़े रखा । भारत का महत्त्वपूर्ण त्योहार 'दीपावली' मेरे नाम से ही जाना जाता है । इन चार दिनों में विद्‌युतदीपों के साथ मेरा मिट्टी का प्राचीन रूप भी सम्मानित किया जाता है । पूरा परिसर मेरे नये, सुंदर आकार और प्रकारों से जगमगाता है ।

मैं "तमसो मा ज्योतिर्गमय" अर्थात- 'अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने' का प्रतीक हूँ ।

– *अशोक शुक्ल*

❑ कथात्मक पद्‌धति से आत्मकथा को समझाएँ । छात्रों से चर्चा करते हुए दीपक का वर्णन, उसकी आवश्यकता और महत्त्व को स्पष्ट करें । उनसे विविध प्रकार के दीपों की चर्चा करें । 'यदि प्रकाश न होता तो जीवन कैसा होता' इसपर पाँच वाक्य लिखवाएँ ।

स्वाध्याय

१. **सागर के बारे में सुनो ।**

२. **निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द बताओ :**

प्रथम, भिन्न, बढ़ाना, सुंदर, प्रकाश, ज्ञान, जलना, विकसित, पूरा, सुबह, कम, जोड़ना, सरल ।

३. **उचित विरामचिह्न लगाकर वाक्यों को पढ़ो :**

(क) करत करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान रसरी आवत-जात ते सिल पर परत निसान

(ख) न्हाए धोए क्या भया जो मन मैल न जाय मीन सदा जल में रहे धोए बास न जाय

४. **उत्तर लिखो :**

(च) आदिमानव ने सर्वप्रथम आग कैसे पैदा की ?

(छ) दीपक को कौन-कौन-से नाम मिलते गए ?

(ज) संगीतकारों ने क्या किया ?

(झ) मनुष्य ने दीपक को हमेशा किसके साथ जोड़े रखा है ?

(ञ) दीपक किसका प्रतीक है ?

458HS7

५. **चित्र देखकर दीपों के नाम बताओ :**

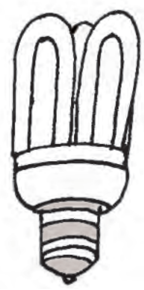
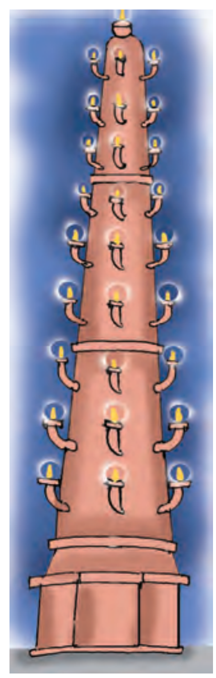

६. **तुम पशु-पक्षियों की सहायता किस प्रकार करते हो, बताओ ।**

● **व्यावहारिक सृजन – पढ़ो और लिखो :**

१०. नकल

प्रशांत की परीक्षा आज से शुरू होने वाली थी । वह दूरदर्शन पर विज्ञापन देख रहा था । पिता जी ने पूछा, "क्यों प्रशांत ! परीक्षा के लिए तैयार हो ?" प्रशांत बोला, " हाँ पिता जी ! पेन-पेन्सिल ले ली । जूते पॉलिश कर लिए । कपड़ों की इस्तरी हो गई । पानी की बोतल भी भर ली है ।"

पिता जी बोले, " शाबास बेटा !" माँ बोलीं, "बेटा देख, कुछ बाकी तो नहीं रह गया है ?" प्रशांत सिर खुजलाते हुए बोला, "माँ ! सब कुछ हो गया है, बस थोड़ी-सी पढ़ाई बाकी है ।" गुस्से से माँ बोलीं, "हमेशा विज्ञापन क्यों देखते रहते हो ?" प्रशांत सहमते हुए बोला, "माँ, मुझे विज्ञापन अच्छे लगते हैं ।" परीक्षा का दिन था । पिता जी स्थिति सँभालते हुए बोले, " अच्छा प्रशांत ! तुम्हें जो विज्ञापन सबसे अच्छा लगता है, उसकी वैसी ही नकल करके दिखाओ ।" प्रशांत गड़बड़ा गया । बोला, "पिता जी ! मैंने कोई भी विज्ञापन इतने ध्यान से नहीं देखा है ।" पिता जी बोले, "बेटा जो भी काम करो, ध्यान से करो । पढ़ाई भी ध्यान और एकाग्रता से ही करनी चाहिए । परिश्रम और लगन से पढ़ोगे तो परीक्षा भी खेल, विज्ञापन जैसी ही मनोरंजक लगेगी ।" प्रशांत पिता जी की बातें ध्यान से सुन रहा था । माँ बोलीं, " बेटा ! चमकने वाली हर चीज सोना नहीं होती । सभी विज्ञापन हमेशा सही नहीं होते । अतः तुम्हें सही-गलत विज्ञापन की पहचान भी होनी चाहिए ।" पिता जी बोले, "विज्ञापन भी एक कला है । तुम भी यह कला सीख सकते हो ।" प्रशांत बोला, "पिता जी ! मेरी आँखें खुल गईं हैं । अब तो आप मुझे पाठशाला पहुँचा दें ।" सुनकर सभी एक साथ हँस पड़े ।

❑ पाठ का मुखर वाचन कराएँ । रेडियो और दूरदर्शन पर देखे/सुने हुए उचित विज्ञापनों पर चर्चा कराएँ । विद्यार्थियों से अच्छे विज्ञापनों की सामूहिक, गुट, एकल में नकल कराएँ । उनसे उनकी पसंद के चुटकुलों, देखे या सुने हुए विज्ञापनों की सूची बनवाएँ ।

३८ CMYK

स्वाध्याय

१. महासागर के बारे में सुनो ।

२. रेल स्थानक के बारे में बताओ ।

३. स्वतंत्रता सेनानियों के नारे पढ़ो और उनका संकलन करो ।

४. उत्तर लिखो :

(क) प्रशांत ने क्या-क्या तैयारी कर ली थी ?

(ख) प्रशांत का कौन-सा काम बाकी रह गया है ?

(ग) पिता जी ने पढ़ाई और परीक्षा के बारे में क्या कहा ?

(घ) माँ ने बेटे को कैसे समझाया ?

(ङ) सभी एक साथ कब हँस पड़े ?

५. चित्र देखकर विज्ञापनों से संबंधित एक-एक वाक्य बताओ :

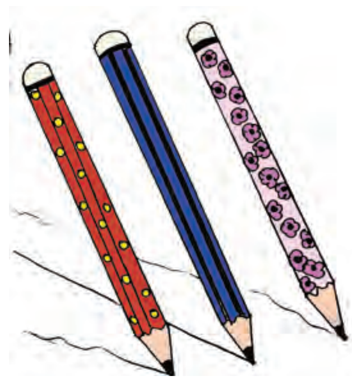

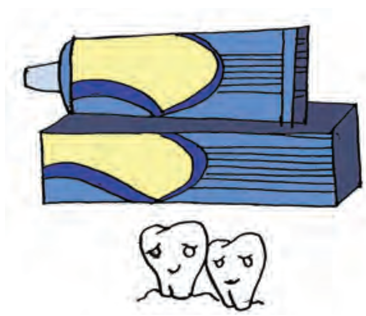

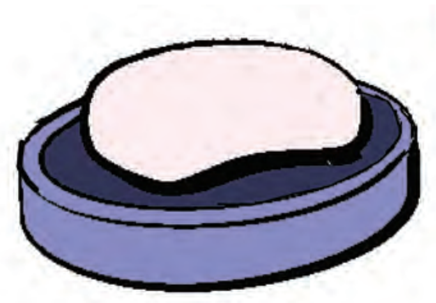

६. संतुलित भोजन में कौन-कौन-से पदार्थ होने चाहिए, बताओ :

रोटी, दूध, आईस्क्रीम, डबल रोटी, पिज्जा, हरी सब्जी, भात, चॉकलेट, बर्गर, बिस्किट, पोहा, दाल ।

✻ पुनरावर्तन ✻

✻ नीचे दी गई चौखट में बिखरे हुए अक्षरों से रसोईघर की वस्तुओं, पंसारी की दुकान में मिलने वाली वस्तुओं, वृक्ष और शरीर के अंगों के नाम ढूँढ़कर लिखो :

चा　　मि　　गे

क	च	मो	र	शो	री	द	श
दा	गु	कु	हा	ब	ग	इ	छा
पे	ई	म्म	आँ	ला	री	स	ट
त	पै	पी	व	सा	बे	उँ	नी
लि	चं	ल	ड़ा	टो	ली	हूँ	प
याँ	क्क	थ	गि	ठ	ल्दी	रा	था
ह	ना	ठ	ज्वा	घु	अ	वा	ज
न	गौ	म	का	बा	ख	छु	र्च

✲ पुनरावर्तन ✲

१. हितोपदेश की सुनी हुई कोई एक कहानी सुनाओ ।
२. अपनी बस/रेल यात्रा के बारे में बताओ ।
३. महान नारियों की जीवनियाँ पढ़ो ।
४. शाक (पत्तोंवाली) और सब्जियों के पाँच-पाँच नाम लिखो ।
५. नीचे दी गई वर्ग पहेली में मात्रावाले शब्द भरो :

१		२		३	४
		५	६		
७	८		९		
१०		११			
	१२			१३	
१४			१५		

बाएँ से दाएँ

१. नया
३. कपट, धोखा
५. मस्ती, नशा
७. बाजार
९. मेघ
१०. फहराना, हवा में हिलाना
१२. शर्म
१४. स्वर्ण
१५. अभिनययुक्त कृति

ऊपर से नीचे

१. नाना का घर
२. गीला
४. ऊपर तक भरा हुआ
६. दबाव डालना
८. पैदल घुमाना
११. सत्ता
१३. कागजी मुद्रा

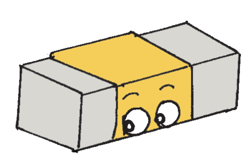
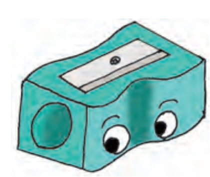

उपक्रम

माँ-पिता जी से चरित्रवान नायकों की कहानियाँ सुनो ।

ईमानदारी को क्यों अपनाना चाहिए, बताओ ।

सार्वजनिक स्थानों के सूचनापट्ट पर लिखी सूचनाएँ पढ़ो ।

तुम जो विषय पढ़ते हो, उनके नाम लिखो ।

● चित्रवाचन – देखो, बताओ और कृति करो :

१. बाजार

गाँव का बाजार

❑ चित्रों का निरीक्षण कराएँ । चित्रों में क्या–क्या हो रहा है, पूछें । चित्रों का वर्णन करने हेतु विद्‌यार्थियों को प्रेरित करें । गाँव और शहर के बाजार के बारे में ८ से १० वाक्य लिखवाएँ । उन्हें गाँव और शहर में क्या पसंद है और क्यों, इसपर चर्चा कराएँ ।

४२ CMYK